Three Month Certificate Coursein Jyotish
Course Code–CCJ 101 Basic Astrology
Paper –I

उद्देश्य

- छात्र ग्रहों की स्थिति का गणितीय आकलन कर सकेंगे।
- छात्र ग्रहों की गति का गणितीय आकलन कर सकेंगे।
- छात्र ग्रहों की बलवत्ता का निर्धारण कर सकेंगे।

ईकाई–I काल–परिमापन एवं स्थान सम्बन्ध

- अक्षांश एवं रेखांश का ज्ञान
- सूर्योदय–सूर्यास्तज्ञान
- पंचांगज्ञान (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, एवं करण)
- दैनिक लग्न प्रवृत्ति का परिज्ञान

ईकाई–II जन्मकुण्डली संरचना प्रक्रिया

- इष्टकाल ज्ञानविधि
- लग्न निर्धारणविधि
- लग्न स्पष्ट एवं भाव स्पष्ट
- चलित एवं निरयन तथा कस्प

ईकाई–III जन्मकुण्डली आधारित अन्य कुण्डलियों की संरचना प्रक्रिया

- होरा एवं द्रेष्काण कुण्डली संरचना
- सप्तमांश एवं नवांश कुण्डली संरचना
- द्वादशांश एवं त्रिंशांश कुण्डली संरचना
- षड्वर्गीय ग्रह बल का निर्धारण

ईकाई–IV ग्रहस्थिति एवं ग्रहगति का परिज्ञान

- ग्रहों का नीचत्व एवं उच्चत्व
- ग्रहों का वक्रित्व एवं मार्गित्व
- ग्रहों का उदय एवं अस्त
- ग्रहों के षड्बल का निर्धारण

सन्दर्भ ग्रन्थः

- अवकहडाचक्रम्, पं. दुर्गादत्त शर्मा, वेंकटेश्वर मुद्रणालय, मुम्बई।
- शीघ्रबोध–काशीनाथ, चौखंभाविद्याभवन, वाराणसी।
- पंचांगविज्ञानम्, भास्कर शर्माश्रोत्रिय, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
- भारतीय ज्योतिष–नेमिचन्द्र शास्त्री।

Three Month Certificate Course in Jyotish
Course Code-CCJ 102 Predictive Astrology
Paper -II

उद्देश्य

- छात्र ग्रहों के प्रभावों का आकलन कर सकेंगे।
- छात्र ग्रहप्रभावजन्य परिणामों का अनुमान कर सकेंगे।
- छात्र जीवन के इष्ट–अनिष्ट समय का सही अनुमान कर सकेंगे।

ईकाई–I ग्रहों एवं राशियों के स्थितिगत प्रभाव

- द्वादश भावों में राशियों की स्थिति के प्रभाव
- द्वादश भावों में ग्रहों की स्थिति के प्रभाव
- ग्रह राशि सम्बन्ध के स्थितिगत विशिष्ट प्रभाव
- उच्चस्थ, नीचस्थ, वक्री, मार्गी एवं अस्तग्रहों के स्थितिगत विशिष्ट प्रभाव।

ईकाई–II ग्रहों एवं राशियों के गत्या धारित प्रभाव

- द्वादश भावों में ग्रहों की गति के प्रभाव
- द्वादश भावों में ग्रहों की गति के प्रभाव
- ग्रह राशि सम्बन्ध के गत्या धारित विशिष्ट प्रभाव
- उच्चस्थ, नीचस्थ, वक्री, मार्गी एवं अस्त ग्रहों के गत्या धारित विशिष्ट प्रभाव।

ईकाई–III ग्रहों एवं राशियों के युत्या धारित प्रभाव

- द्विग्रहयुति के प्रभाव
- त्रिग्रह युति के प्रभाव

- चतुर्ग्रह युति के प्रभाव
- पंचग्रह युति एवं षड् ग्रह युति के प्रभाव

ईकाई–IV ग्रहों एवं राशियों के दृष्टया धारित प्रभाव

- मित्रग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव
- शत्रुग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव
- उच्चस्थ एवं नीच स्थग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव
- वक्री, मार्गी एवं अस्त ग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव

सन्दर्भ ग्रन्थः

- कुण्डली दर्पण–नारायण दत्त श्रीमाली
- द्वादशभाव सिन्धु, व्या.–नरहरि शास्त्री, ठाकुरदास एण्ड संस, वाराणसी।
- फलदीपिका–ज्योतिर्विद् गणेशदैवज्ञ।